International Journal of Arts & Education Research

वर्तमान भारतीय शिक्षा में सांख्य दर्शन का महत्व एवं उसकी उपादेयता

अश्विनी कुमार शर्मा *[1]

[1]शोधकर्त्ता, सांई नाथ विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड।

डॉ0 एनी बेसेण्ट के अनुसार - शिक्षा द्वारा बालक की सभी आन्तरिक क्षमताओं को तथा उसकी प्रकृति के प्रत्येक पहलू को बाहर लाना है, जिसमें उनमें बौद्धिक तथा आध्यात्मिक तौर पर शक्ति प्राप्त हो सके । ताकि वह अपने कॉलेज जीवन की समाप्ति पर एक उपयोगी, देशभक्त, पवित्र व सज्जन व्यक्ति बन सके।

इस प्रकार शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्तित्व के विकास के साथ-साथ आध्यात्मिक जगत से भी सम्बन्ध स्थापित करती है। शिक्षा के प्रति महर्शि कपिल का दृश्टिकोण आध्यात्मिक तथा मनावैज्ञानिक का मानव में समुचित विकास है, जिसका प्रादुर्भाव एवं सामाजिक प्रसार मानव मात्र में शिक्षा के द्वारा ही हो सकता है। अतः मूल्यपरक शिक्षा का ही मानव जीवन मे एक मात्र महत्व हैं।

IJAER

*Corresponding Author